महामत कहें ऐ मोमनों, ए उदेयपुर की बीतक ।
अब कहों मन्दसोर की, जो बीतक हुकम हक ॥५०॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुन्दर साथ जी ! उदयपुर की बीतक आपको सुनाई है । अब श्री राजजी के हुकम से मंदसौर में जो कुछ बीतक हुई उसका वर्णन करेंगे ।

(प्रकरण ५०, चौपाई २६७७)

मन्दसोर की बीतक

अब कहों मन्दसोर की, आये उदेयपुर से चल ।
जब नौरंग चढ़ा राने पर, हुआ मुलक चल विचल ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि मैं अब मंदसौर की बीतक कहता हूं । जब उदयपुर से चले तो औरंगजेब की सेना ने राणा के राज्य उदयपुर पर चढ़ाई कर दी तो वहां उथल-पुथल मच गई।

सम्बत् सत्रह सै छत्तीसा, लगा सैंतीसा जब ।
मन्दसोर के बीच में, आए पोहोंचे तब ॥२॥

सम्वत् १७३६ (सन् १६७९ ई०) समाप्त हुआ तथा १७३७ (१६८०) आरम्भ हुआ था कि मंदसोर में धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी पहुंचे ।

इन समें फकीरी का, भेख धरा अनूप ।
सोभा छब सरूप की, वारों कोटक रूप ॥३॥

इस समय श्री जी ने फकीरी का एक अनुपम भेष धारण कर रखा था । इनके सुन्दर विराजमान सरूप की अनुपम शोभा पर करोड़ों सुन्दर रूप न्योछावर कर दूं ।

गोटा सोभे सिर पर, ऊपर कनढपी ।
दोए पुरत लोइ धागे भरी, ए पेहेनत हैं टोपी ॥४॥

श्री प्राणनाथ जी के सिर पर किनारी लगी टोपी शोभायमान है । उसके ऊपर कनढप्पी पहनी है । धागों से भरी दोहरी ऊनी चादर ओढ़े हैं ।

अति सुन्दर तिलक बन्यो, दोए रेखा बीच बिन्द ।
गोपी चन्दन सुपेत का, मुख सोभित मानों चन्द ॥५॥

उनके सुन्दर मस्तक पर दो रेखाओं के बीच गोपी चन्दन का सुन्दर तिलक लगा है । श्री जी का मुख मंडल चन्द्रमा के सामान सुशोभित है ।

Nijanand App

जे श्रवनी सोभे कानों मिने, दोए बाले कंचन के ।
अत राजत छब प्यार की, लगा प्यार फकीरी से ॥६॥

स्वामी जी के कानों में बूंदा सुशोभित है । वे सोने के दो बाले पहने हुए हैं मुख की प्रेममयी छवि मनमोहक एवं लुभावनी लगती है । उन्होंने फकीरी भेष धारण किया है । ऐसा लगता है कि श्री जी को इस सादगी वाले भेष से प्रेम हो गया है ।

पेहेनी कण्ठी तुलसी की, और बड़ी माला चार ।
अति सोभित अंग मेखली, लोइ धागे भरी सुमार ॥७॥

उनके गले में तुलसी की कंठी और चार बड़ी मालायें शोभा दे रही हैं । शोभा से भरपूर शरीर पर मेखली (अलफी, चोगा बगैर बाजू वाला, सन्तों का खुला कुर्ता) अत्यन्त मनमोहक प्रतीत होता था । वे धागों के भराव से भरी गर्म लोई लिए हुए हैं ।

और गोदड़ी ओढ़न की, हाथों लई बनाए ।
सेली सुमरनी मुत्तका, अंग सोभित हैं ताए ॥८॥

श्री जी ने वस्त्रों के टुकड़ों से बनी एक सुन्दर गोदड़ी ओढ़नें और बिछाने के लिए ले रखी है, जो सुन्दर साथ ने उनके लिए बनाई थी । सेली (हाथ में लपेटी लम्बी माला), सुमरनी (जाप करने की छोटी माला) और मुत्तका (छड़ी) सुशोभित हो रही है ।

उपरनी धोती अंगोछा, पहरे और बांधें कम्मर ।
एह छबि ब्रह्मांड में, सोभा सब ऊपर ॥९॥

श्री जी ने धोती इस प्रकार पहन रखी है कि वह आधी पहनी है और आधी कंधे पे डाल रखी है । कंधे पर अंगोछा शोभायमान है । उनका यह स्वरूप ब्रह्मांड में सब भेषों से बढ़कर सुशोभित है ।

एक पात्र तूंबे का, और तूंबा कम्मर ।
साज सबे झोली मिने, राखत कांध ऊपर ॥१०॥

हाथ में एक तूंबे का बर्तन तथा दूसरा कमर में बंधा रहता है । निर्गुण भेष की अन्य सामग्री कंधे पर धारण कर रखी है ।

पेहेनी पांव में पनहीं, चलत चटकनी चाल ।
संग केतेक मोमिन, चलत होत खुसाल ॥११॥

चरण कमलों में पनहीं (खड़ाऊं) पहने हुए लटकनी मटकनी चाल से चलते हैं । उनके साथ मोमिनों की जमात प्रसन्नता के साथ चल रही है ।

Nijanand App

सबों ने भेख पेहेन्या, देख अपनें साहिब ।
चाह खेल देखन की, हुई बड़ी खुसाली तब ॥१२॥

अपने धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी के भेष के अनुसार ही सबने भेष धारण कर रखा था । संसार के खेल को देखने की चाह मोमिनों की पूरी हुई । इसलिए सब सुन्दर साथ के आनन्द की सीमा का पार नही था ।

श्री बाई जी भेख बनाइया, सोभित हैं निरगुन ।
साज फकीरी राखत, जंग दज्जाल से करें मोमिन ॥१३॥

श्री बाई जू राज ने भी फकीरी भेष धारण कर लिया । इस प्रकार, मोमिन (ब्रह्मसृष्टि, सुन्दरसाथ) ईमान से गिराने वाली कलयुगी शक्तियों से युद्ध कर रहे हैं ।

राह बीच राम पुरा, तहां निकट चारन का गाम ।
तहां उठाई हवेली, लगे ईंटें पारने के काम ॥१४॥

मन्दसौर से पहले राम पुरा के पास ही पूरण मल चारन का एक गांव था । वहां सब सुन्दर साथ ने अपने ही हाथों से ईंटों की एक हवेली बना डाली ।

बनाए ठाढ़ी हवेली करी, सरूप रहें तिन में ।
पूरनमल चारन, वह गाम था उनसे ॥१५॥

उस में श्री बाई जू राज सहित महिला सुन्दरसाथ के रहने का प्रबन्ध कर दिया । पूरनमल इस गांव का मुखिया था ।

रही उनकी माता खिजमत में, करे उपली पेहेचान ।
इनके सरूप देख के, उपला था ईमान ॥१६॥

पूर्ण मल की माता ने स्वामी जी के स्वरूप की ऊपर की पहचान कर बहुत सेवा की ।

जब दज्जाल नें जोरा किया, दिल बैठा बेरीसाल ।
वह भाई राजा का था, हुआ दज्जाल का हाल ॥१७॥

राजा के भाई बैरीसाल के मन में दज्जाल ने बैठकर सुन्दरसाथ के विरूद्ध गलत भावनाएं पैदा कर दी।

बुरी नजर करी साथ पर, लूट लेऊं फकीरन ।
तब चारन के घरों गए, फरियाद करी मोमिन ॥१८॥

उसने मन में बुरे भाव लेकर सुन्दरसाथ को लूटने की योजना बनाई तथा चारण के घर आ पहुंचा तथा उससे कह दिया कि हम इनको लूटना चाहते हैं । आप इनकी सहायता नही करना ।

Nijanand App

तब चारन की माता ने, बांधी जोर कम्मर ।
इन वैरागियों सामी देखे, मारों तिनें खर ॥१९॥

पूर्णमल चारन की माता बड़े हौंसले के साथ कमर कस कर खड़ी हो गई और कहने लगी कि इन साधुओं की तरफ जो बुरी नजर करेगा उसकी मैं गधे के समान पिटाई करूंगी ।

या तों मैं मरों तिन पर, हत्या देऊं उन ।
इनसे बुरा क्यों देखे, मेरे घर आए साधुजन ॥२०॥

या तो मैं लुटेरों के हाथों मर जाऊंगी और स्वयं मरकर हत्या का पाप उनको दूंगी । साधुजन मेरे घर आए हैं । उन्हें बुरी नजर से कोई भी क्यों देखे ?

तब स्याह मोंह ले पीछे फिरे, उत से बेरीसाल ।
चला न कछुये तिन का, बुरा हुआ हवाल ॥२१॥

चारन की माता का साहस देखकर बैरीसाल के आदमी लज्जित होकर भाग गए । वो काला मुंह लेकर लौट आया । उनका कुछ भी वश नही चला और लोगों ने उनको कटु वचन कहकर बुरा हाल कर दिया।

वह हवेली छोड़ के, आए मन्दसोर ।
तहां आए के बैठे, हरपरसाद घरों ठौर ॥२२॥

चारन के गांव की उस हवेली को छोड़कर तथा सुन्दरसाथ को लेकर आप श्री जी मन्दसौर पधारे । वहां पुहंच कर हरिप्रसाद के यहां ठहरने की व्यवस्था की ।

तहां पातसाही लसगर, रहे मन्दसोर के गिरद्रवाए ।
गावत सनंधे तहां बैठ के, कोई कोई सुनने को आए ॥२३॥

उस समय मन्दसौर के चारों तरफ औरंगजेब की फौजों ने घेरा डाला हुआ था । वहां बैठकर प्रतिदिन सनंध वाणी को मधुर स्वर में गाने लगे । उसे सुनने के लिए सेना के कुछ लोग आ जाते थे ।

इत सुनने को आवत, पठान दौलत खान ।
सुन सनंधे घायल भया, भला ल्याया ईमान ॥२४॥

वाणी सुनने के लिए दौलतखान पठान वहां आता था । वाणी सुनकर उसके मन को बहुत चोट लगती थी । वह पूर्ण ईमान के साथ तारतम लेकर सुन्दरसाथ में शामिल हो गया ।

Nijanand App

और सेरखान कोहटी, सुनी सनंधे कान ।
संग केतेक पठान, तबहीं ल्याए ईमान ॥२५॥

शेरखान कोहटी ने अपने कुछ साथियों के साथ संनध की वाणी को सुना । उन सबको स्वामी जी के स्वरूप की पहचान हो गई तथा पूरे ईमान के साथ श्री निजानन्द सम्प्रदाय में शामिल हुए ।

बिना एक महम्मद की, सनंध पढ़ी जब ।
दौलत खान पठान को, जोस आया तब ॥२६॥

सुन्दरसाथ ने जब सनंध की वाणी से "बिना एक महंमद" की सनंध सुनाई तो दौलत खां पठान के मन में बहुत जोश आया ।

बिना एक महम्मद है, और न काढ़े बोल ।
फेर फेर एही कहे, एही काढ़त मुख कौल ॥२७॥

"बिना एक महंमद" बार-बार यही बोल उसके मुख से निकलता था । इसके बिना और कोई शब्द उसके मुख से निकलता ही नही था । वह बार-बार यही कहता था कि इसी महंमद के बिना और कुछ भी नही है ।

किरपाराम इत आइया, तहां पाती ले पुकार ।
उदेयपुर का साथ पहाड़ों मिने, हुआ विलाप करन हार ॥२८॥

इस समय कृष्णराम उदयपुर के दुःखी सुन्दरसाथ की ओर से एक पत्र लेकर आया । उसने बताया कि औरंगजेब की फौजों के प्रकोप के अत्याचार से उदयपुर का सुन्दरसाथ पहाड़ों एवं जंगलों में भूखे प्यासे पड़े हैं तथा बिलख-बिलख कर विलाप कर रहे हैं ।

विलाप इनका सुन के, दिल में हुआ दरद ।
मुंह दरगाह बीच करके, पुकार करी महम्मद ॥२९॥

इन सुन्दरसाथ का विलाप श्री जी के मन को खा गया । इस भयंकर दुःख को सुनकर श्री जी का दिल बहुत दुःखी हुआ । परमधाम की ओर एकाग्रचित्त होकर हकी सूरत महंमद के स्वरूप ईमाम मेंहदी श्री प्राणनाथ जी पूर्णब्रह्म ने श्री राज जी के चरणों में पुकार लगाई और अर्जी की कि हे धनी ! आपकी अंगनाओं पर क्या क्या कहर हो रहे हैं ?

Nijanand App

पांच किरंतन करके, फेर दाखिल किए कलाम ।
तबहीं पोहोंची हक को, हुई मेहर ऊपर इसलाम ॥३०॥

इस दर्दनाक पुकार से पूर्णब्रह्म अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ने सुन्दरसाथ के ऐसे घोर संकट को समाप्त करने के लिए अपनी मेहर से वाणी के ५ प्रकरण उतरे (किरंतन ३५-४०) । वे प्रकरण किरंतन ग्रन्थ में शामिल हैं । आतम की दर्द भरी पुकार श्री राज जी के चरणों में तुरन्त पहुंची और धनी ने श्री निजानन्द सम्प्रदाय पर समर्पित सुन्दरसाथ पर यह कृपा की । इससे सबके दुःख दूर हो गए ।

इन समें इबराइम, करने आया दीदार ।
सोहोबतें राजी भया, फेर आया दूसरी बार ॥३१॥

इस समय इब्राहीम श्री जी के दर्शन करने आया । श्री जी की चर्चा सुनकर वह अति प्रसन्न हुआ तथा दूसरी बार फिर श्री जी के दर्शन करने आया ।

तब लाल की सोहोबत सें, बातें हुईं इस ठाम ।
एक किस्सा कुरान का, करो हमारा काम ॥३२॥

श्री लालदास जी ने इब्राहीम के पास बैठकर उससे अनेक बातें की । श्री लालदास जी ने इब्राहीम से कहा कि तुम कुरान के एक प्रसंग का टीका करने का हमारा काम करो।

तब उनने उतराइया, सूरत एक कुरान ।
तिनमें केतिक आयतें, श्री जी यें सुनी कान ॥३३॥

इब्राहीम ने कुरान का एक सूरा (अध्याय) उतारा । जिसकी कई आयतों को श्री जी ने स्वयं सुना ।

सुनते ही सुख उपज्या, यामें बात हमारी सब ।
जो उतरावे तुम को, तो बड़ा काम होवे अब ॥३४॥

कुरान की आयतों में अपनी बात सुनकर श्री जी को अति प्रसन्नता हुई कि कुरान में सब हमारी ही बातें लिखी हैं । श्री जी ने कहा कि यदि इब्राहीम से और भी प्रसंग उतरवा लेते तो हमारा एक महान कार्य हो जाता ।

तब उनसों बातें करी, कहे मैं उतराऊं कलाम ।
कछुक लोभ दिखाया, राजी हुआ इस ठाम ॥३५॥

तब श्री लालदास जी ने इब्राहीम से कहा कि मैं आपसे कुरान के कुछ और प्रसंग उतरवाना चाहता हूं । उसको जब कुछ लालच दे दिया गया तो वह उतरवाने के लिए तैयार हो गया ।

Nijanand App

प्रात को आए खड़ा हुआ, सुरू हुआ सिपारा सोलमा ।
दो जुज उतराए दिए हाथ में, बड़ी राज को हुई तमा ॥३६॥

दूसरे दिन प्रातः ही इब्राहीम आ गया तथा सोलहवां सिपारा उतारने का काम आरम्भ कर दिया । उसमें दो सूरे कुरान के उतार लिए गए तो श्री जी के दिल में एक महान चाहना उत्पन्न हो गई ।

इत एक मजिल भई, बड़ी खुसाली दिल ।
बीतक अपनी बांच के, होत दिल निरमल ॥३७॥

कुरान के कुछ भागों का टीका देखकर श्री जी के दिल में बहुत खुशी हुई । कुरान में अपनी बीतक पढ़ी तो पता चला कि इसके पढ़ने से सब सुन्दरसाथ के संशय मिट जाएंगे ।

एक ठौर रात को बंगले, उतारत हैं कुरान ।
लाल इबराइम बैठत, राज पासे पौढ़े सुने कान ॥३८॥

एक जगह बंगले में बैठकर रात को इब्राहीम और श्री लालदास जी कुरान को उतार रहे थे तो वहीं पास में लेटे-लेटे उस प्रसंग को श्री जी सुन रहे थे ।

उतरावते एक सुकन, पढ़ा इबराईम नें ।
ए तो कोई रावसी, कलम मारी उननें ॥३९॥

उतारते समय एक शब्द इब्राहीम ने पढ़ा और कहने लगा कि यहां तो किसी अनपढ़ ने भूल से अपनी कलम चला दी है । ये शब्द ठीक नही हैं ।

तब श्री जी ऐ कहूया, फेरके पढ़ो सुकन ।
ए तुम क्या कहूया, फेर हमें सुनाओ कानन ॥४०॥

तब आप स्वामी जी ने इब्राहीम से कहा कि आपने अभी-अभी ये क्या पढ़ा था ? कृपा करके फिर से पढ़ो । हम उस शब्द को फिर से सुनना चाहते हैं ।

तब कहूया इबराइम नें, जो सुनी मुसलमान ।
महम्मद की उम्मत के, अरजी न पहुंचे कान ॥४१॥

तब इब्राहीम ने कहा-जो सुन्नी (सुनकर ईमान लाने वाली ब्रह्मसृष्टि) मुसलमान महम्मद की उमंत के हैं । उनकी दुनीयावी अर्जी कभी भी अल्लाह तआला नही सुनेंगे ।

Nijanand App

कोई पोहोंच ना सके, मरातबा मोमिन ।
तुम हरफ न फिराओ इनका, जैसा लिखा होए सुकन ॥४२॥

स्वामी जी ने कहा कि कोई भी मोमिनों के मरातबे (महानता) को नही पहुंच सकता । तुम कुरान के लिखे हुए शब्दों को मत बदलो । जैसे लिखे हैं, वैसे ही रहने दो ।

और वाही सुकन को, समझत नाहीं तुम ।
कोई क्या जाने उन क्या लिख्या, सो समझत नाहीं हम ॥४३॥

यही तो वे शब्द हैं, जिनके अर्थ आप लोग समझ नही सकते । कोई क्या जान सकता है कि इन शब्दों को लिखकर मुहम्मद साहब क्या कह गए हैं । उनके उस भाव को ही तो हम लोग समझ नही पा रहे ।

लगता एक चबूतरा, तहां पढ़नें बैठे श्री राज ।
बीतक देख राजी हुये, भए पूरन मनोरथ काज ॥४४॥

वहीं पास में लगता हुआ एक चबूतरा था । उस पर बैठकर श्री जी पढ़ने लगे । उसमें ब्रह्मसृष्टि की सारी हकीकत (बीतक) का कुल वृत्तान्त लिखा था । उसको देखकर उन्होंने मन ही मन विचार किया कि अब हमारे सारे कार्य सिद्ध हो जाएंगे ।

अब अपनी बात के, सब बिध भए कारज ।
अब तुमें करना कछु ना पड़े, रही न कोई गरज ॥४५॥

श्री लालदास जी से स्वामी जी ने कहा कि हमें अपने सिद्धान्त के लिए जिन प्रमाणों की आवश्यकता थी, वह सब अपनी मूल बातों सहित कुरान में मिल गए हैं । अब आपको प्रमाण जुटाने के लिए विशेष रूप से कोई आवश्यकता नही रहेगी ।

अब ए सब साथ को, लिखो खुस खबर ।
मेहर भई श्री राज की, सो लिखी तुम ऊपर ॥४६॥

अब यह शुभ समाचार समस्त सुन्दरसाथ को लिख कर भेज दो । श्री राजजी की मेहर से जो वस्तु (कुरान में अपनी हकीकत) प्राप्त हुई, उसे आपको लिख रहे हैं ।

लिखने बैठे संझा को, सो जहां लों अरूण उदे ।
इबराइम जाए अपने घरों, लाल दातुन पानी करे ॥४७॥

श्री लाल दास जी और इबराहीम सांयकाल कुरान उतारने बैठते थे । सारी रात बैठ कर लिखते ही रहे । प्रातःकाल हुआ तो इबराहीम अपने घर गया । श्री लाल दास जी दातुन आदि क्रिया करने लगे ।

Nijanand App

यों करते उतरे, सिपारे जो चार ।
सोलह सत्रह अठारह उन्नीस, ताको करनें लगे विचार ॥४८॥

इस प्रकार १६, १७, १८, १९ यह चार सिपारे कुरान के उतारे गए । इन चारों को उतारते हुए सिपारों में छिपे हुए भेदों को पढ़ कर श्री जी विचार करने लगे ।

फेर सिपारा तीसमा, जाकी छत्तीसमी सूरत ।
सो लिया उतार के, फेर लगे अलफ लाम मीम से इत ॥४९॥

फिर कुरान के तीसवें सिपारे की छत्तीसवीं सूरत को उतारने का काम पूरा कर लिया गया । फिर अलफ, लाम, मीम पहले सिपारे से उतरवाना शुरू किया ।

फेर दूसरो तीसरो, लगे चौथो उतारन ।
पांचमा सुरू हुआ, उतार चले मोमिन ॥५०॥

जब दूसरे, तीसरे और चौथे सिपारे तक उतारने का कार्य हो गया तब पांचमा सिपारा आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे पूरा कुरान उतारने लगे ।

तब इबराइम के दिल में, आए बैठा दज्जाल ।
लेऊं तपसीर छीन के, तो मन को करों खुसाल ॥५१॥

पांचमा सिपारा लिखते समय इब्राहीम के मन में बेईमानी आ गई । वह विचार करने लगा कि इनसे यह तफसीरे हुसैनी छीन लूं तो मेरा मन प्रसन्न होगा ।

तब लगा खरखसा करने, बीच बैठावे साहिद ।
मोमिन गरीब देख के, देवे डर सरियत हद ॥५२॥

इब्राहीम के दिल में बेईमानी आ जाने के कारण वह खटपट करने लगा । निर्मल दिल वाले मोमिनों को वह शरीयत का डर दिखाने लगा कि किसी से गवाही दिला लो कि कुरान हदीस हमारे हैं ।

मांगने लगा तपसीर को, मैं ले जाऊं अपनें घर ।
तब लालें पेहेचानियां, दज्जाल की नजर ॥५३॥

तब वह तफसीरे हुसैनी मांगने लगा कि मैं इसे अपने घर ले जाऊंगा । इसकी ऐसी बातों से श्री लाल दास जी ने पहचान लिया कि अब इसके दिल में बेईमानी आ गई है ।

Nijanand App

फितुवा उठावनें कों, करता है ए काम ।
मैं तपसीर इनको क्यों देऊं, ए फिरा दीन इसलाम ॥५४॥

श्री लाल दास जी विचार करने लगे कि अब यह झगड़ा खड़ा करने के लिए शोर कर रहा है । मैं यह तफसीर इसे क्यों दूं । यह तो दीने इसलाम श्री निजानन्द सम्प्रदाय के विमुख हो रहा है ।

तब श्री जीएं जानिया, उनके मन की बात ।
तब जवाब चोखा दिया, करी तोफान की विख्यात ॥५५॥

तब श्री जी ने उसके मन की बात को जान लिया और उसे कुरान के प्रमाण दिखाकर खरा जवाब दिया तो इब्राहीम कहने लगा कि मैं मुसलमानों को बुला कर यह किताबें ले लूंगा ।

मोमिन दिल दलगीर भए, ए बात सुनी कान ।
अब क्या करना इनसे, भई न इन्हें पहेचान ॥५६॥

झगड़े की बात सुनकर सुन्दर साथ बहुत दुःखी हुए । तब श्री जी ने सुन्दरसाथ को समझाया कि अब इसे कुछ भी कहने की जरूरत नही है । इसको इस बात के महत्व की पहचान ही नहीं हुई ।

ए बात सुनी पठान नें, दौड़ के आया कदम ।
देखे श्री जी साहिब जी को दलगीर, उन सौंपी थी आतम ॥५७॥

मुहब्बत खां पठान इस बात को सुन कर श्री जी के चरणों में हाजिर हुआ । श्री जी को चिंतित देखकर वह स्वयं भी दुःखी हो गया । वह श्री जी के चरणों पर पहले ही समर्पित हो चुका था ।

सो काहे भए आप दलगीर, सो बात सुनाई कान ।
इबराइम उठाया फितना, जो गरीब लोग ईमान ॥५८॥

मुहब्बत खां ने श्री जी से दुःखी होने का कारण पूछा तो श्री जी ने इब्राहीम की सारी बात कह सुनाई कि इब्राहीम ने सीधे सादे मोमिनों के बीच झगड़ा खड़ा करने की धमकी दी है ।

सुन सुकन मुहब्बत खान, बोहोत हुआ गुस्से ।
सिर भानों इबराइम का, मन्दसोर के बीच में ॥५९॥

मुहब्बत खाँ यह वचन सुनते ही गुस्से में आकर बोला कि मैं यहां मन्दसौर में सबके सामने इब्राहीम का सिर फोड़ कर चूर-चूर कर दूंगा ।

Nijanand App

इहां से उठ धाइया, गया इबराइम के घर ।
कुतका लिया कांध पे, जाए सवाल किया जोरू पर ॥६०॥

यहां से उठकर मुहब्बत खाँ सीधे इब्राहीम के घर गया । उसने एक मजबूत लाठी कन्धे पर रख ली तथा उसकी पत्नी से जाकर पूछा -

कहां गया इबराइम, दई गाल जुबान ।
तब वह मुनकर भई, गए निकाह सुनावनें कान ॥६१॥

इब्राहीम कहां गया है ? गुस्से में भरे मुहब्बत खाँ ने गाली निकालते हुए कहा । तब इब्राहीम की पत्नी ने कहा कि वह घर में नहीं है । किसी की शादी कराने गए हैं ।

ए चला गया तहां ही, जाए के किया सोर ।
इबराइम निकल आया, क्यों एता मुझ पर जोर ॥६२॥

मोहब्बत खां सीधा वहीं चला गया, जहां इब्राहीम निकाह पढ़ रहा था । उसने वहां कटु शब्दों से ऊंची आवाज दे कर इब्राहीम को बाहर बुलाया । इतना शोर सुनकर इब्राहीम बाहर आ गया और बोला कि आप मुझ पर इतने खफा क्यों हैं ?

मैं तो तुम्हारा गुलाम, करों फुरमाया सोए ।
तें क्यों दुख दिया हादीय को, ऐसा झूठ तुझसे होए ॥६३॥

मैं तो आपका गुलाम हूं । आप जो भी हुकम करें, मैं वही करने को तैयार हूं । मुहब्बत खाँ ने कहा कि तुमने हमारे प्यारे महबूब को क्यों दुःखी किया । तुमने ऐसा शैतान पना किसके बल पर किया ।

तें मेरे आगे कहया, ए मेरे मुरब्बी ।
मैं गुलाम इनका, अब तें क्यों फेरी अपनी सबी ॥६४॥

मेरे सामने तो तुमने यह स्वीकार किया था कि यह तो हमारे हादी हैं और मैं इनका दास हूं अब तुमने अपना ईमान किस कारण से गिरा दिया ।

मार डांरू तुझको, द्वा रसूल की ना छोड़ों क्यों ए कर ।
तब लगा उनके कदमों, आगे गीदड़ हुआ इन पर ॥६५॥

रसूल साहब की कसम खाकर मैं कहता हूं कि तुझे जिन्दा मार डालूंगा । मैं तुम्हें किसी भी हालत में नहीं छोडूंगा । तब इब्राहीम गीदड़ की तरह कायर होकर मुहब्बत खां के कदमों में गिरकर माफी मांगने लगा ।

Nijanand App

जाए कदमों लाग उनके, जाए राजी कर मोमिन ।
नातो तुझे ना छोड़हों, हुए दलगीर दिल रोसन ॥६६॥

मुहब्बत खां बोला - जा मूर्ख ! उन हादी श्री प्राणनाथ जी के चरणों में जाकर क्षमा मांग । उन्हें प्रसन्न कर नहीं तो तुम्हें मार डालूंगा । सदा प्रसन्न रहने वाले श्री जी को तुमने दुःखी किया है ।

प्रात समें उठ के, इबराइम आया धाए ।
आए श्री जी के कदमों लगा, सिर ना उठाया जाए ॥६७॥

दूसरे दिन प्रातः उठते ही इब्राहीम भागता हुआ आया और उसने श्री जी के चरणों में सिर रख कर प्रणाम किया तथा शर्म के मारे सिर भी नहीं उठा सका ।

तब नूर मुहम्मद बोलिया, उठ खड़ा हो मुरदार ।
मारों कटारी पेट में, इतही हो जाए सुमार ॥६८॥

तब नूर महंमद ने कहा कि उठ मुरदार ! दिल तो यही चाहता है कि तेरे पेट में कटारी मार कर यहीं जिंदा मार दूं ।

पर क्या करों डरता हूं हादी से, इनका हुकम नाहे ।
एती बेअदबी करके, फेर जीवता उठ के जाए ॥६९॥

परन्तु मैं क्या करूं ? हादी श्री प्राणनाथ जी की ऐसी आज्ञा नहीं है । इसलिए मैं उनसे डरता हूं । वरना ऐसी गुस्ताखी करने के बाद तुम यहां से जिन्दा नहीं जा सकते थे ।

कहया मैं तुम्हारा गुलाम, मुझसे भई भूल ।
अब तुम माफ करो, मैं तुमसे किया न सूल ॥७०॥

इब्राहीम श्री जी के चरणों में विनम्र प्रार्थना करते हुए बोला कि मैं आपका दास हूं । मेरे गुनाह को माफ कर दीजिए । मैं आपकी साहिबी को नहीं पहचान सका ।

मैं ग्रहे तुम्हारे कदम, सो मैं ना छोड़ों कब ।
सब मोमिनों के कदमों लगा, वाको माफ किया तब ॥७१॥

अब तो मैंने आपके चरणों को पकड़ लिया है इन्हें किसी भी तरह से छोडूंगा नहीं । उसने उठकर सभी मोमिनों के चरणों को छूकर प्रणाम किया । तब श्री जी ने उसे क्षमा कर दिया ।

Nijanand App

तब उनके भाई नें, पांचमा सिपारा ।
वह लिखावनें लगा, हुआ जो पूरा ॥७२॥

तब इब्राहीम के भाई ने पांचवां सिपारा उतरवाना शुरू किया तथा पूरा उतरवाकर श्री लालदास जी को सौंप दिया ।

इन समें दज्जाल नें, सोर किया जोर ।
रहे साथी सब जुदे जुदे, काहू चित ना हुआ मरोर ॥७३॥

इतने में इब्राहीम ने जाकर फौज के बड़े-बड़े अफसरों को भड़काकर वैरागियों को पकड़ने के लिए उकसा दिया । इस बात का शोर-शराबा सुनकर श्री जी ने भी सुन्दरसाथ को अलग-अलग रहने के लिए कह दिया लेकिन किसी भी सुन्दरसाथ का मन उदास नही हुआ ।

छिप रहे जुदे जुदे, आवे दीदार को एक बेर ।
झोरी भर के ल्यावहीं, टुकड़े मांगे फेर ॥७४॥

सब इधर-उधर रहते थे । केवल एक बार दिन में श्री जी के दर्शन के लिए जाते थे । सब साथी अपने-अपने मुहल्लों से भीख मांगकर झोली भर कर लाते थे ।

श्री राज आरोगत हेतसों, ए किनकी झोरी के ।
सो बतावत अपने, ए ल्याया मैं ॥७५॥

श्री जी बड़ी प्रसन्नता के साथ भीख मांगे हुए टुकड़ों को आरोगते हुए पूछते थे कि यह किसकी झोली का है । इसके टुकड़े बहुत स्वादिष्ट हैं, जिसकी झोली थी, वह उठकर कहता था कि यह मैं मांगकर लाया हूं ।

राजी होवें तिन पर, बातें हंस हंस करें बनाए ।
मैं अजमावत तुम को, इन मजलों पहुंचाए ॥७६॥

श्री जी उन साथियों पर बहुत प्रसन्न होकर हँस-हँस कर बातें भी करते थे । उन्होंने कहा कि मैंने ऐसी दशा में तुम्हारे ईमान की परीक्षा लेने के लिए ही पहुंचाया है ।

मोमिन राजी होए के, बातां करें खुस दिल ।
ए दिन हम कब पावहीं, रहे एक दूजे हिलमिल ॥७७॥

मोमिन ऐसे हालात में भी प्रसन्न होकर खुश दिल से उत्तर देते हैं कि हे धाम के धनी ! ऐसे आनन्दमयी दिन हमें फिर से कहां मिलेंगे । सब सुन्दरसाथ आपस में घुल-मिलकर अति प्रेम भाव से रहते थे ।

Nijanand App

तुम सिर भाना दज्जाल का, कुटम्ब कबीला आस ।
रहे बोहोत बल सूरत में, संग जोस जबराईल खास ॥७८॥

श्री जी ने मोमिनों से कहा कि आप सबने बेशक लोक-लाज और मर्यादा का सिर तोड़कर जड़ से खत्म कर दिया है । कुटुम्ब-कबीले की अभिलाषा भी आपने छोड़ दी है । मोमिनों के चेहरों पर नूरी झलक रहती थी और मोमिन सदा श्री राजजी महाराज की शक्ति का आसरा लेकर चलते थे ।

श्री बाई जी नें इन समें, सेवा करी मोमिन ।
दिल बनाए आगे धरें, हमेसा दिल रोसन ॥७९॥

श्री बाई जी राज भी बड़े प्रेम के साथ झोलियों के सामान को एक-दिली के भाव से प्यार से बांटकर खिलाती थीं और सुन्दरसाथ के साथ खुश दिल के साथ व्यवहार करती थीं ।

एक दूजे को सेवहीं, हर भांत कर चित ।
हेत करें मिनों मिनें, कहूं सक न पैठत ॥८०॥

सुन्दरसाथ प्रसन्नचित्त होकर एक दूसरे की सेवा करते हैं । एक-दूसरे के साथ वे प्रेम का व्यवहार करते हैं तथा किसी के दिल में कोई शक-सन्देह नही होता है ।

नान्हा भाई चलया, मन्दसोर के में ।
ताले माफक ए रहया, उतने ही सुख सें ॥८१॥

इस समय नान्हा भाई मन्दसौर में धाम चले । उनके भाग्य में इतना ही सुख लिखा था, जो उन्होंने लिया ।

मुकुन्द दास को उत थें, भेजे भावसिंह पास ।
तुम जाए उनकी खबर लेओ, है जीवता कछु आस ॥८२॥

स्वामी जी ने मुकुन्द दास जी को मन्दसौर आने से पहले ही भावसिंह के पास भेज दिया था कि तुम उसके पास जाकर देखो कि उसमें अंकूर है या नही ।

जो हमको उत बुलावहीं, तो हम आवें उत ।
तहां जाए के लिखियो, जैसा देखो तित ॥८३॥

यदि वह हमें वहां बुलाएंगे तो हम चले आएंगे । वहां जाकर तुम जैसा अवसर देखो, वैसा लिखकर भेजना ।

Nijanand App

मुकुन्द दास जाए पोहोंचे, भावसिंह सों किया मिलाप ।
चरचा उनसों रस पड़ी, उन कबूल किया आप ॥८४॥

श्री जी की आज्ञा के अनुसार मुकुन्ददास औरंगाबाद पहुंचे । राजा भावसिंह से मिलकर आत्म तत्व की चर्चा हुई । चर्चा सुनकर उसे आत्मिक शान्ति मिली तथा उसने श्री जी को बुलाने की स्वयं इच्छा प्रकट की ।

तब उहाँ से कासद, भेज दिया सिताब ।
मन्दसोर आए पोहोंचिया, पाती ले किताब ॥८५॥

तब मुकुन्द दास जी ने एक सुन्दरसाथ के हाथ राजा भावसिंह के हाथ से लिखी हुई पत्री को मन्दसौर भेजा । पत्र लेकर वह सुन्दरसाथ श्री जी के चरणों में मन्दसौर आया ।

उनमें भली भांत के, लिखे थे सुकन ।
पढ़ के आप राजी भए, सब साथ मोमिन ॥८६॥

उस पत्र में यह लिखा था कि राजा भावसिंह ने बहुत ही आग्रह पूर्वक आपको बुलाया है । सब सुन्दरसाथ सहित श्री जी इस पत्र को पढ़ कर प्रसन्न हुए ।

अब मन्दसोर से, चलने का किया उपाय ।
साथ हुए सब तैयार, खबर सबों पोहोंचाए ॥८७॥

अब मन्दसौर से चलने की तैयारी की । सब सुन्दर साथ को सूचना भिजवा दी गई । यह सुनते ही सब चलने को तैयार हो गए ।

सब साथ भेले भए, हुए चलनें को हुसियार ।
आठ महीने इत रहे, हुआ हुकम परवरदिगार ॥८८॥

सब सुन्दरसाथ इकट्ठे चलने के लिए एक स्थान पर एकत्रित हो गए । आठ महीने मन्दसौर में रहने के बाद श्री राजजी महाराज की आज्ञा के अनुसार वे मंदसौर से चले ।

महामत कहे ऐ मोमिनों, ए मन्दसोर की बीतक ।
अब इहां से आगे चले, सो कहों हुकम हक ॥८९॥

धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे सुंदरसाथ जी ! यह मन्दसौर की बीतक आपसे कही है । यहां से चलकर जहां पहुंचेगे वहां की बीतक अब कहेंगे ।

(प्रकरण ५१, चौपाई २७६६)

Nijanand App